(1) हिन्दी निबन्ध रचना एच एस एस
विषय: परंपरा और आधुनिकता के बीच की टकराहट' 344

242

"अच्छा पकड़कर बुरा हटाओ"
"- एक नया सुप्रभात कलिए"

आधुनिक दुनिया के अंश है हम सब। नये चीजों के पीछे भागनेवाले आधुनिक दुनिया' की एक भाग। जो करते है, वह अच्छा हो या बुरा सिर्फ अपनेलिए करने वालों की दुनिया का एक छोटा टुकड़ा - यह है हम। जो कुछ करते है वह सब हमारेलिए नहीं 'मेरेलिए'। अहंभाव या अपना - अपना में अधिष्ठित दुनिया। आधुनिकता बुरा दिया तो भी उसे अच्छा समझकर अपनानेवाला। अच्छा या बुरा सब स्वार्थ चिंता से ही सोचनेवाला। हम समझाना है कि हमारे परंपरा क्या था? यह नई पीढी को यह भी जानता नहीं कि अपने नाना - नानी और दादा - दादी कौन - कौन है। इस तरह कि यह दुनिया मे हम अपने रीती-रिवाजें, संस्कार, संस्कृति आदि को पहचानकर एक भारतीय जिंदगी जीना बहुत अत्यावश्य है।

परंपरा और आधुनिकता - फर्क : जो हम आज देखते है हमारे बीच मे, वह सब आधुनिकता कि तोफा है। यह तोफा कैसा है, यह क्या है और इससे हम क्या करना है ...

सब सिर्फ़ और सिर्फ़ हमारे पास ही
जानने केलिए हम पहले हमारे पर
को जानने होगा। एक भारतीय होनवे
भारत का संस्कृति को अच्छी तरह से
समझाना है और तब हमको समझाएंगा
कि आज और कल के बीच का फ़र्क क्या
है? आज कि दुनिया के सबसे बड़े प्रश्न
यह है कि पैदे होनेवाले बच्चों को भी
यह बताते है कि हमको एक अच्छी
जिंदगी केलिए अलग-अलग राष्ट्रों में
जाकर काम करना होगा और हमारे राष्ट्र से
हमें कुछ नहीं मिलेगा। यह बदलते है तो
हमें कुछ न कुछ अच्छा प्रकट होगा
हमारे राष्ट्र में।

एक मुद्रा की दो-दो मुख्य
जैसे सब चीजों में अच्छा और बुरा
होगा - यह जरूर बात है। हमें जो करना
है वह यह है कि अच्छा और बुरा
समझकर अच्छे को अपनाना और बुरा
को हटाना है। अब हमारे परंपरा और संस्कार
को देखते है तो यह समझ में आएगी
कि बहुत सारी अच्छा कार्यक्रम हुई थी
लेकिन साथ ही बहुत सारे बुरा थी। यह
बुरा को हटाकर तोड़कर हमारे जिंदगी
अच्छे बनाने केलिए बहुत सारे महान
व्यक्तियों ने अपने जिंदगी दिया। लेकिन

आज के दुनिया आधुनिकता के पीछे भागकर बुरा और अच्छा ना समझकर दुनिया को नाश की ओर ले जाते है।

क्या - क्या फर्क : शिक्षक - छात्र के बीच में, शिक्षा संप्रदाय में, बच्चें और माता -पिता के बीच में, परिवार में, संस्कृति पर, चिकित्सा संप्रदाय में, काम पर, मोबैल फोन और इन्टरनेट के उपयोग पर, दूसरो की आदर करने में आदि सब में अच्छा और बुरा असर पड़ा है आज।

शिक्षा संप्रदाय : आज कि शिक्षा संप्रदाय को हम सब जानते है। भारत में बीच से चौदह वर्ष की बच्चों के लिए शिक्षा सरकार ने एक नियम के और आदेश देया है। लेकिन आज हम विद्यालयों में क्या -क्या देखते है -यह सोचना पड़ेगा। छात्र और अध्यापक के बीच में जो अच्छा संबन्ध था वह आज हम देख नही सकता। बच्चें उसके मातपिता से जीते है और अध्यापकों की बातों को कान नही देते है। पौराणिक भारत में हम गुरुकुल शिक्षा संप्रदाय के अनुसार अपने जिंदगी जी लिया था। उससे अच्छा पकड़कर एक शिक्षा संप्रदाय होने तो उससे बेहतर कुछ नही होता। भारत संस्कार और वेद के अनुसार "माता, पिता और गुरु ईश्वर" है। लेकिन आज की यह आधुनिक दुनिया

में । माता कौन • पिता कौन फिर आ।
गुरु जिसको कुछ भी कीमत न देते
बच्चे । हम जो जिंदगी जीते हैं इसके
अंतिम विजय हमारे, अध्यापकों के हाथों
है । जो हमको जिंदगी की पहला पाठ
पढ़ाते हैं उसने ही जिंदगी की असली
रास्ते दिखाते हैं हमको । उसके आदर
करना और ईश्वर समझना हमको अच्छा
ही दे देगा । इतना कहना है कि आधुनिकता
के पीछे भागते समय यह मत भूलो कि
हमारा जिंदगी सिर्फ तीन लोगा की वरदान
है इनको भूलकर कुछ नहीं होता कुछ नहीं
हो सकता । इसलिए इसमें हम अपनी
संस्कृति के अनुसार परंपरा के रूप
अनुसार एक अच्छा विद्यालय की
बनाना होगा ।

परिवार से शुरु करते हैं : हम
क्या है और कैसे है यह दो कार्य के
आधार पर है । एक हमारा परिवार और
दो हम कैसे हमारा परिवार को देखते
है । परिवार मतलब यह नहीं कि माँ,
पिता और दो और । भारतीय संस्कृति
और परंपरा हमें यही बताते हैं कि
यह दुनिया ही हमारा परिवार है । वसुधैव
"वसुदेव कुटुंबक" का मतलब यही है ।

इस दुनिया, इसका एक-एक चीज-यह है हमारा परिवार। स्वार्थ तात्पर्य न होकर, अपने-अपने विचार न होकर हमारा परिवार के भलाई के लिए जीना ही हमारा लक्ष्य होना है। लेकिन आज कुछ हो रहा है आधुनिक दुनिया में यह इसके भी विरुद्ध है। अपने माँ और बाप को भी मारने के लिए तैयार होते हैं नई पीढ़ी। नशा और इन्टरनेट इसका कारण बनते रहते हैं। अपने बहन और माँ को भी समाज बेचने के लिए तैयार है आज के समाज। वह नहीं सोचते हैं कि उसने यह माँ और दूसरे एक एक उसके जन्म दिया माँ और बहन और भाई है। साथ पैदा हुए

इसके कारण सोचते हैं तो हमें समझाएंगा कि एक पैसे के लिए है। कि एक मन आने का और इस तरह कि परिवार के स्नेह कारण यह होते हैं कि परंपरा के ओर देख संबंधों की कमी है। परिवार लीजिए तो हमें एक स्नेह भरा परिवार को देखने मिलेगा। अनेक व्यक्तियों की स्थिति कैसा है? एक लेकिन आज का होगा चार या पाँच व्यक्तियों परिवार में होगा काम की जल्दी और और उसमें भी होगा एक साथ बिताने के लिए समय। नहीं मिलेगा।

ऐसी एक स्थिति में कैसे होगा
प्यारा, सुंदर, छोटा-सा लेकिन बड़े
वालों की परिवार?

मोबाइल फोन और इन्टरनेट

की अभिनिवेश : उन्नीस शताब्दी के बीस
शताब्दी को मार्टिन कूपर के द्वारा
दिया तोहफा - 'मोबाइल फोन'। उसके साथ
अपने घर की दरवाजे को तोड़कर
आ जाया मुफ्त - 'इन्टरनेट'। आज कि
आधुनिक दुनिया को अपने हाथों में
पकड़कर खेलाते हैं यह दोनों। क्या-क्या
किया है? करते हैं? और करनेवाले हैं। यह
पता नहीं लेकिन एक चीज मालूम है
कि जो कुछ करते हैं व सब अच्छे, लेकिन
नहीं। पुराने जमीन में हम नई पीढ़ी
किसी दूसरी व्यक्ति को देखते हैं तो इसके
अपने कॉल नीचे डालती
आदर करने लिए बैठा है तो वहाँ से
है और यदि हम है और उसकी वन्दना
स्वड़ होते हैं आज किसी दूसरे व्यक्ति
करते थे। लेकिन तो हम अपने कानों से
को देखते हैं आदर सूचना
इयरफोन उतारते हैं - घर में हो या
करने लिए। घर में हो रही है या एक
कक्षा में, एक शादी हो मोबाइल फोन के
मौन के अवसर हो

देना नहीं देख सकता है दुनिया को हम।
यह बात पूर्ण रूप से सही है कि जो कुछ उपयोग इससे होते हैं यह किसी और चीज नहीं दे पाऊँगी। लेकिन हम यह भी सोचना है कि हमारे संस्कृति, परंपरा हमें क्या सिखाया है।

काम-काज और भारत :

सभी काम के क्षेत्रों का उसके महत्व है। सभी काम के क्षेत्रों का उसके महत्व है। लेकिन हमारा राष्ट्र हमें यही सिखाया है। लेकिन हमारा राष्ट्र हमें यही सिखाया है दूसरे राष्ट्रों आधुनिक दुनिया में सब दूसरे राष्ट्रों के आधुनिक दुनिया में है। यह नहीं सोचते पर जाना चाहते हैं कि जहाँ हमने जो लिया है, जिसने हमको शिक्षा दिया है अकेलिन ही हम काम करना है। " मैंने कभी भी भारत से काम करना है। मैंने कभी भी भारत से काम केलिए व्यक्तियों को चुनाना बंद नहीं करूँगा। क्योंकि अगर मैं ऐसा किया तो भारत बनूँगी सबसे बड़ा राष्ट्र" किया तो भारत बनूँगी सबसे बड़ा राष्ट्र" बिल गेट्स ने कहा माइक्रोसॉफ्ट के स्थापक था यह। अब सोचो आप भारतवासियों के कीमत दुनिया के सबसे कीमत के दीमाग वाला है। इससे हम हमारे राष्ट्र की भलाई केलिए जो काम करना है। भलाई केलिए जो काम के आधार पर। हमारी संस्कृति और हमारा राष्ट्र महान। मैं बनूँगा हमारा राष्ट्र महान।

नारी और समाज : हमारे पौराणिक

ने हमें यही सिखाया है कि नारी
आदर समाज का आदर है। 'यत्र न
पूजन्ते, रमन्ते तत्र देव:'। अर्थात् ये
है कि जहाँ नारी होती है वहाँ ईश्वर
है। और एक अच्छी समाज केलिए नारी
को प्रभाव अच्छा ही होती है। वे शिक्षी
है संदेश छोड़गी को। भारत संस्कृति ने
नारीयों को ईश्वर के समान देखते है।
लेकिन आज क्या है? नारी को पैर के
नीचे डालती है, उसके सपनों को संदेश
में डालते है। नारी नर का शान है।
जो स्वतंत्रता हमारे नेताओं ने बिछावन
किया नारीयों केलिए रह अभी भी प्राप्त न
हुई है। आधुनिकता और सब अच्छा है
लेकिन 'माँ' के बिना उससे कुछ उपक
उपकार नहीं होगा। यह जरूर।

आदर करनेवालों को आदर

वं. दो.: हमारा संस्कृति यही कहते है कि
धर्मनिरपेक्षता के साथ, जाति, आयुर
वर्ण, विवेचन न होकर जो तुम्हें आदर
करते है उसको आदर दे दो। अच्छा
करो। दूसरों के भलाई केलिए प्रवृत्ति
करो। सब ईश्वर देखते है और काम
करो। सब ईश्वर देखते है।

कर्मों पर ध्यान दीजिए। लड़का - लड़की एक समान हैं। माता, पिता और गुरु ईश्वर हैं। हमारे वेद और उपनिषदों सब यही संदेश दिया है हमको। लेकिन आज एक विपरीत स्थिति हो गया है। इससे हमारे संस्कृति एक ले जाने कलिए क्या - क्या करना पड़ेगा?

पहला पाठ परिवार से : पुराणिक युग में एक दिन की उम्मीद माँ और पिता के पैर वन्दन करके शुरु होता था। आज माता-पिता के पैर छूना बच्चे एक शाप मानते हैं। इसको बदलना है हमें पहले ही। एक दिन की शुभ उम्मीद, आरंभ करो माँ-पिता के पैर से। यह बात जरूर है कि अच्छा हो होगा इससे कुछ भी बुरा ना होगा। जो माता और पिता देते हैं यह जिंदगी पर हमें ऊपर एक ले जाएगा।

दूसरी द्वार - विद्यालय : विद्यालय केवल पाठ पढ़ने कलिए नहीं होते हैं। यह जानकर केरल सरकार ने कई - कई योजनाओं को रूप दिया है आज। इसके साथ भारत संस्कृति पर आधार करके शिक्षा देकर एक

अच्छी समाज हम बन सकता
सर्व शिक्षा अभियान ने पाँच से
एक के छात्रों के लिए एक पुस्त
देता है उसके पर्यावरण के स्नेह
बढ़ाने के लिए। ऐसी तरह एक पुस्त
हमारे संस्कृति और पुराणिकता पर
बच्चों को देते तो वह सब अच्छी
बनेगा। यह सब मिलकर
भारतवासियों
बनेगा एक अच्छा भारत हमारे गाँधीजी
ने सपना किया भारत।

एक बड़े वृक्ष उसके
पत्तों के बिना जी सकता है लेकिन
मिट्टी के बिना बिलकुल नहीं जी सकती।
उसको पानी बनाने के लिए अपने मिट्टी
अत्यावश्य है। ऐसी तरह ही
है परंपरा के बिना मानव जीवन।
हम सोचते हैं कि हो सकता है
लेकिन नहीं यह सोच सच्च नहीं है।
भारत संस्कृति को पहले जैसे बनाने
के लिए किससे साध्य है? अधिक मत
सोचो। तुमसे। सिर्फ तुमसे साध्य है
वह। इसके लिए हमें एक ही चीज करना

है। अपने आपको सुधार करो। एक व्यक्ति सुधार होने से एक ~~सुधार~~ घर सुधार होते हैं, एक घर सुधार होने से एक मुहल्ला और एक गली और अंत में इस राष्ट्र सुधार हो जाता है। इसलिए आओ... हाथ में हाथ पकड़कर एक साथ खड़े हो जाओ... संरक्षण करो हमारे दुनिया को, संस्कृति को, परंपरा को... हमसे होगा... यह... हमसे ही होगा... एक नया सुप्रभात... अच्छी रोशनीयाँ की... ।

Code No : 242